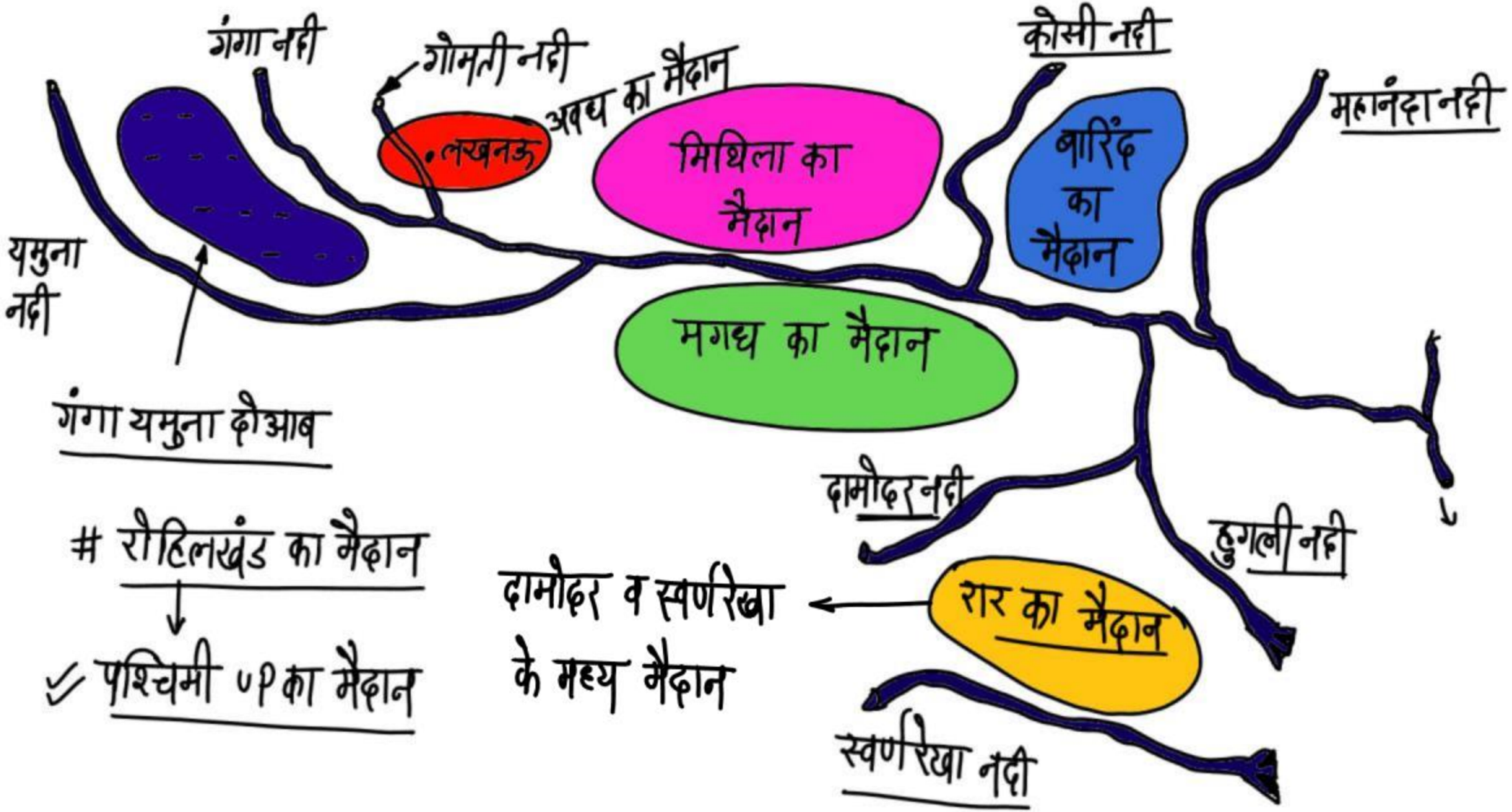
गंगा नदी
गोमती नदी
अवध का मैदान
कोसी नदी
महानंदा नदी
लखनऊ
मिथिला का मैदान
बारिंद का मैदान
यमुना नदी
मगध का मैदान
गंगा यमुना दोआब
दामोदर नदी
हुगली नदी
रोहिलखंड का मैदान
↓
✓ पश्चिमी UP का मैदान
दामोदर व स्वर्णरेखा के मध्य मैदान
रार का मैदान
स्वर्णरेखा नदी

* हिमालय 5 लाख Km^2 व उत्तरी मैदान लगभग 7 लाख Km^2 क्षेत्रफल पर विस्तृत है।

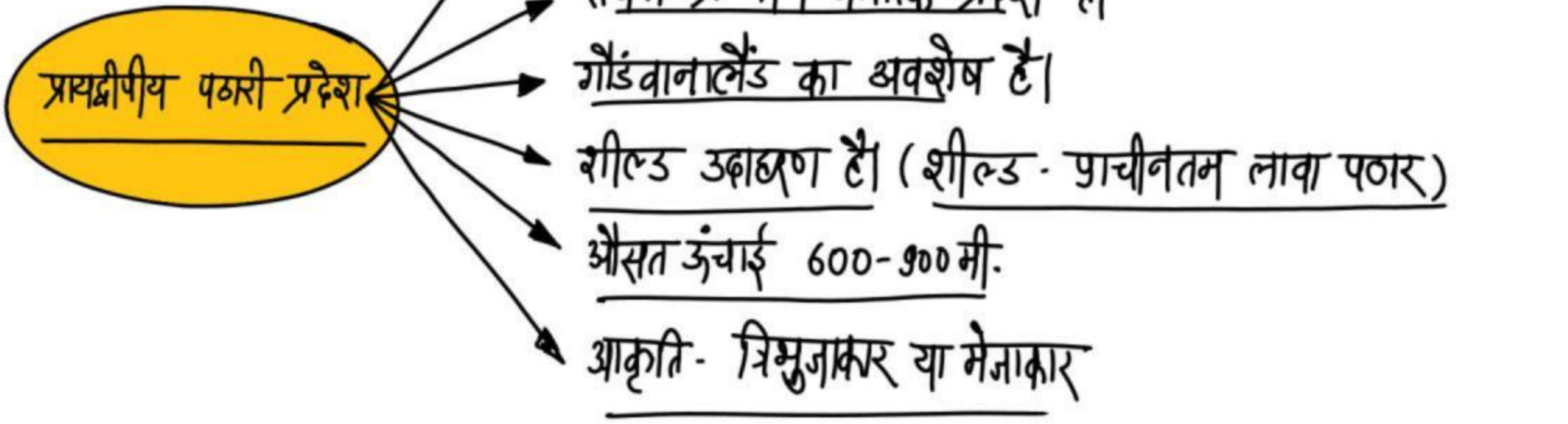

प्रायद्वीपीय भारत

① मध्यवर्ती उच्च भूमि

② दक्कन का पठार

③ कर्बी-स्नलोंग का पठार

① मध्यवर्ती उच्च भूमि :-

↓

औसत ऊंचाई 700 से 1000 मी.

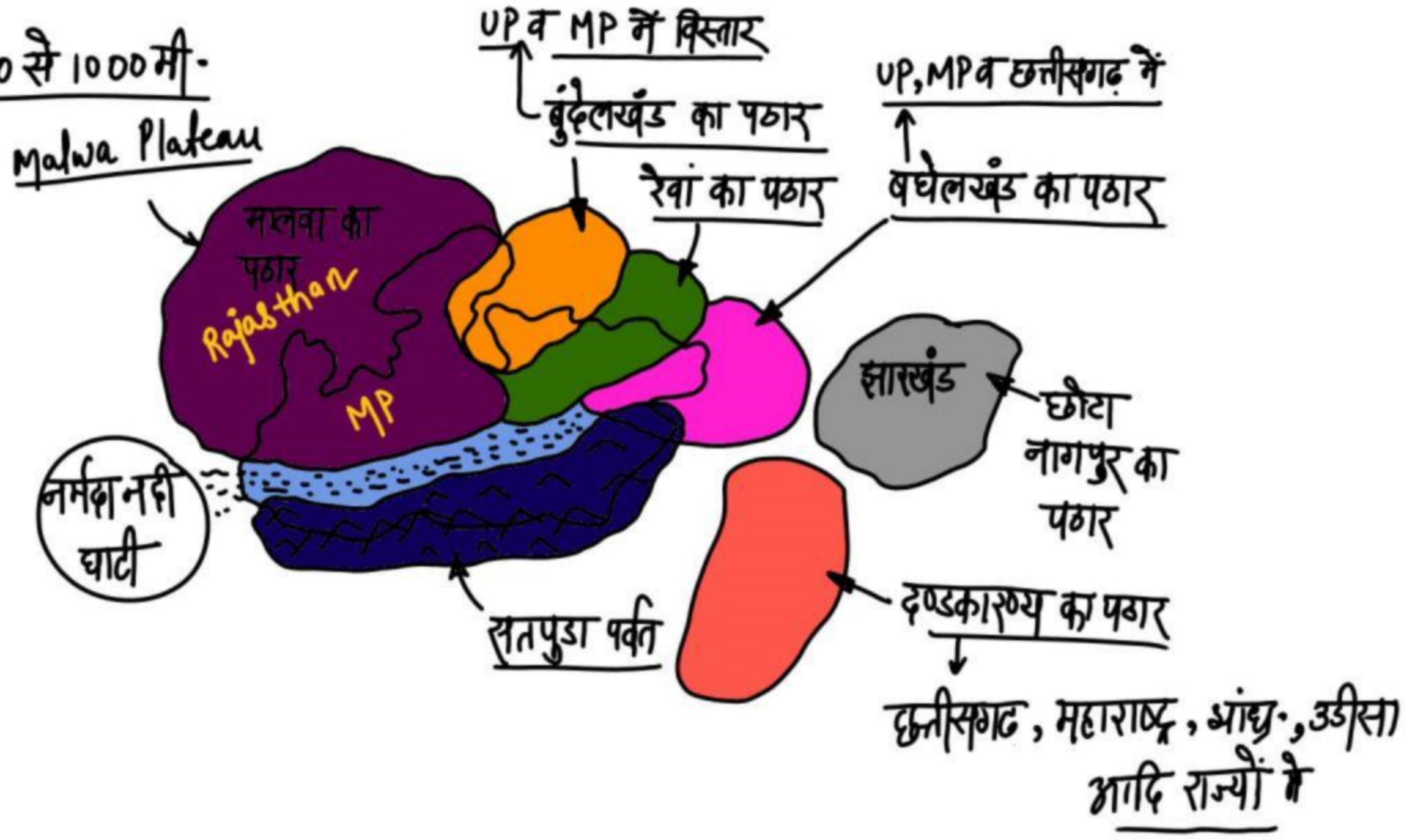

मालवा का पठार :- Rajasthan व MP में विस्तृत है, जिसका निर्माण क्रिटेशियस काल में लावा जमाव से हुआ है।

→ इसे राज॰ में हाड़ौती पठार कहा जाता है।

→ यहां लावा चट्टानों के अपक्षयित (weathering) होने से काली मृदा का विकास हुआ है।

→ इस पठार उज्जैन (महाकाल नगरी), भोपाल (झीलों की नगरी), इंदौर (मिनी मुंबई) व सांची नगर अवस्थित है।

↳ स्तूपों की नगरी ✓

↳ इस पठार से चंबल, क्षिप्रा, कालीसिंध, पार्वती नदियां प्रवाहित होती हैं।

② बुंदेलखंड का पठार :- UP व MP में विस्तृत है (UP व MP के 7-7 जिलों में)

→ यह प्राचीन ग्रेनाइट, नीस चट्टानों से निर्मित पठार है जिसके अपरदन व अपक्षयित होने के कारण लाल-पीली मिट्टी का विकास हुआ है।

→ यहां से बेतवा व केन नदियां प्रवाहित होती है।

→ यहां अर्द्धशुष्क जलवायवीय दशाओं का विकास हुआ है।

③ बघेलखंड का पठार :- MP व छत्तीसगढ़ में

↳ कैमूर पहाड़ियों के पूर्व में स्थित है, जो कि सोन व महानदी अपवाह तंत्र को पृथक करता है।

⊕ दण्डकारण्य का पठार :- विस्तार मुख्य रूप से छत्तीसगढ़, उड़ीसा में मिलता है।
(महाराष्ट्र, झारखंड में भी है)

→ इसे छत्तीसगढ़ में बस्तर तथा उड़ीसा में कालाहांडी पठार कहा जाता है।
- बस्तर → टिन के लिए प्रसिद्ध
- कालाहांडी पठार → बॉक्साइट भंडारों के लिए प्रसिद्ध

→ यहां प्रवाहित मुख्य नदी इंद्रावती है। → चित्रकोट जलप्रपात

→ इस पठारी भाग में स्थित डल्लीराजहरा की खान (छत्ती०) लौह अयस्क भंडारों हेतु प्रसिद्ध है।

(5) छोटानागपुर का पठार :- मुख्य रूप से झारखंड में विस्तृत भूगर्भिक दृष्टिकोण से काफी विविधता पूर्ण है।

→ धारवाड, क्रिटेशियस, गोंडवाना आदि कई प्रकार की चट्टानें मिलती हैं।

→ भारत का रूर प्रदेश व खनिज गृह कहा जाता है।

↓ जर्मनी में है।

क्रिटैशियस कालीन लावा जमाव

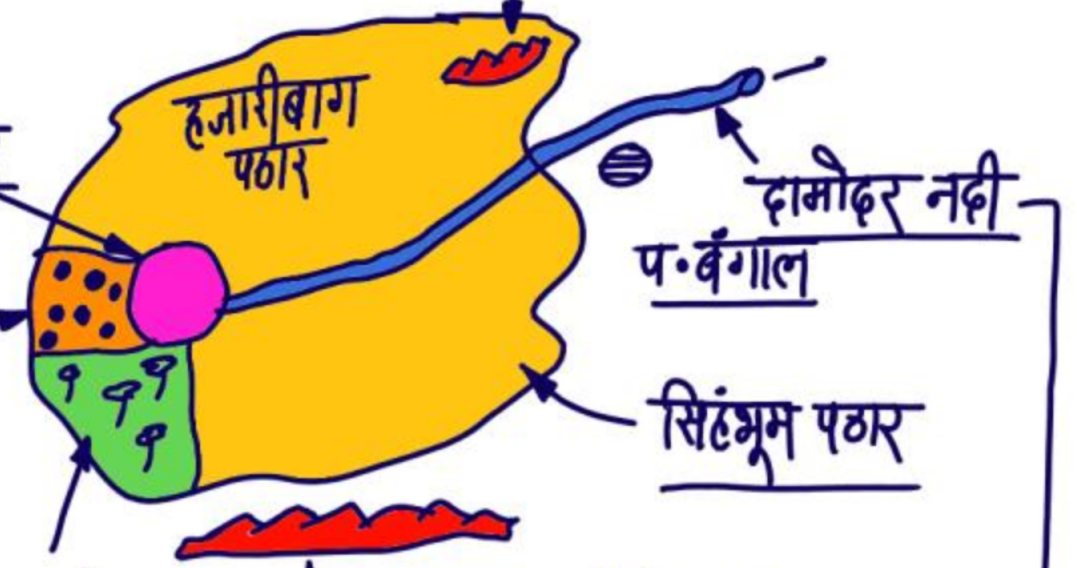

यहां मेसा व बुटे स्थलाकृतियां मिलती हैं।

✓रूक उत्थित भूखंड है जो कि ग्रेनाइट चट्टानों से निर्मित है तथा लैटेराइट निक्षेप पाये जाते हैं।

दामोदर भ्रंश घाटी में गोंडवाना चट्टानों से कोयला की प्राप्ति।

⇒ रांची पठार की औसत ऊंचाई 600 मी तथा हजारीबाग की औसत ऊंचाई 300 मीटर है। → Bihar Board Book 9th

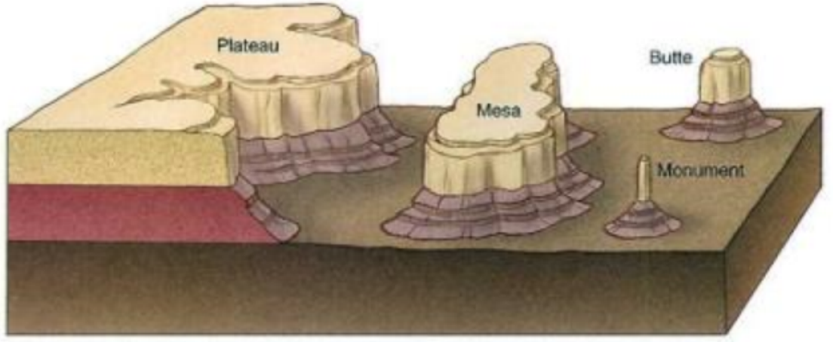

FIGURE 12.3
Characteristic erosional landforms in arid or semiarid areas with horizontal rock layers. Retreat of a plateau leaves mesas, buttes, and monuments as remnants.

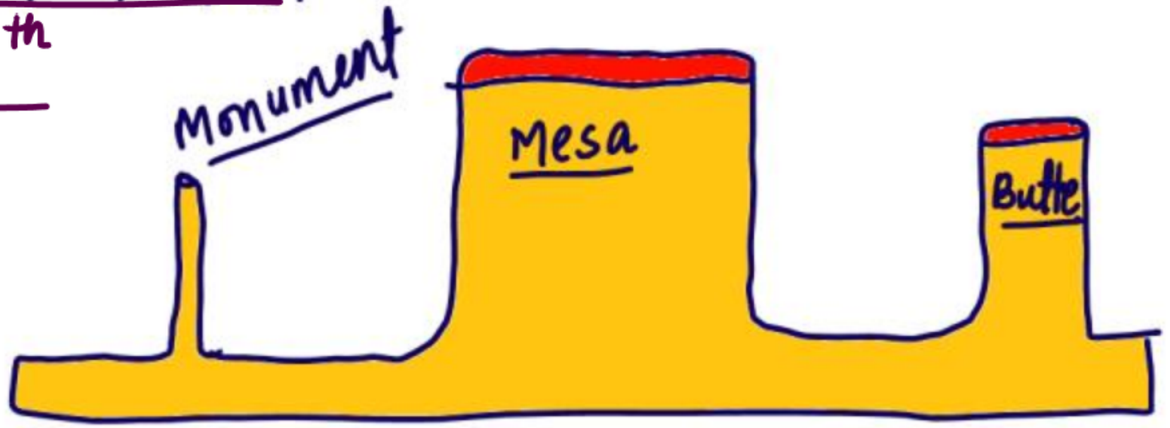

सर्वोच्च चोटी = पारसनाथ (23वें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ से संबंधित)

(1365 मी)

सम्मेद शिखर भी कहा जाता है।

⇒ छोटा नागपुर पठार मालदा भ्रंश या राजमहल-गारो गैप द्वारा मेघालय पठार से पृथक होता है।

⇒ कर्बी-एनलोंग पठार असम में है तथा इस पर उत्तरी कचार की पहाड़ी स्थित है।

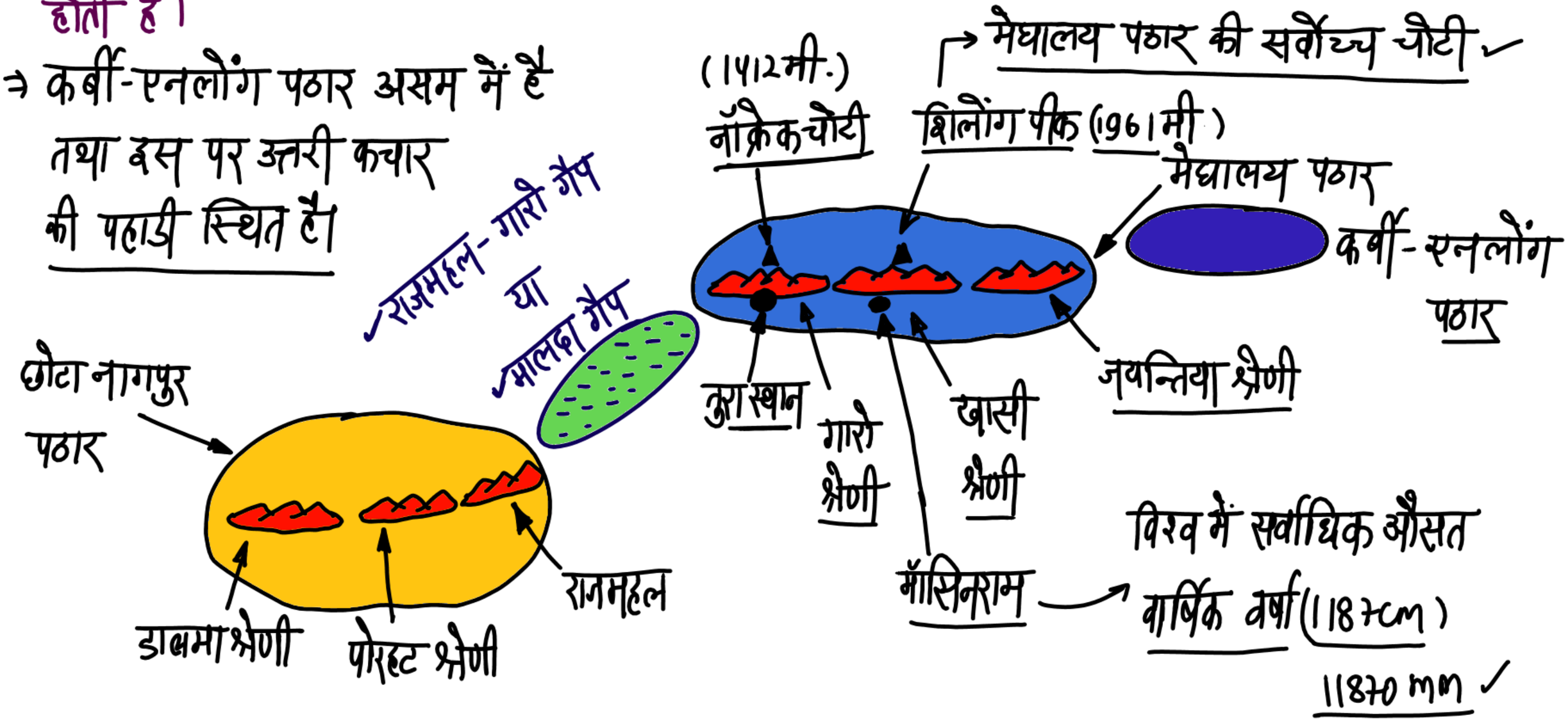

* राजस्थान का जैसलमेर जितनी वर्षा 10 वर्ष में प्राप्त करता है उतनी वर्षा मेघालय के तुरा स्थान पर 1 दिन में प्राप्त होती है।

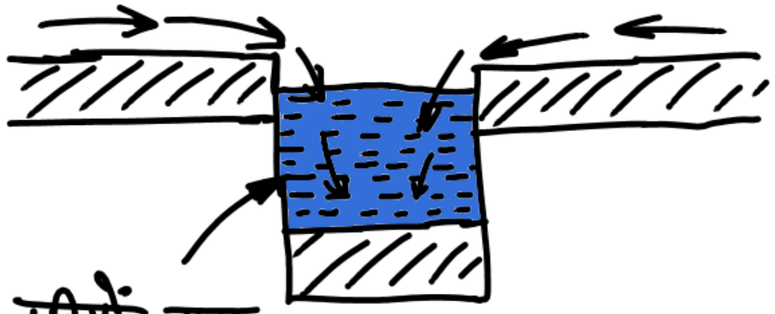

नदियों द्वारा अवसादीकरण

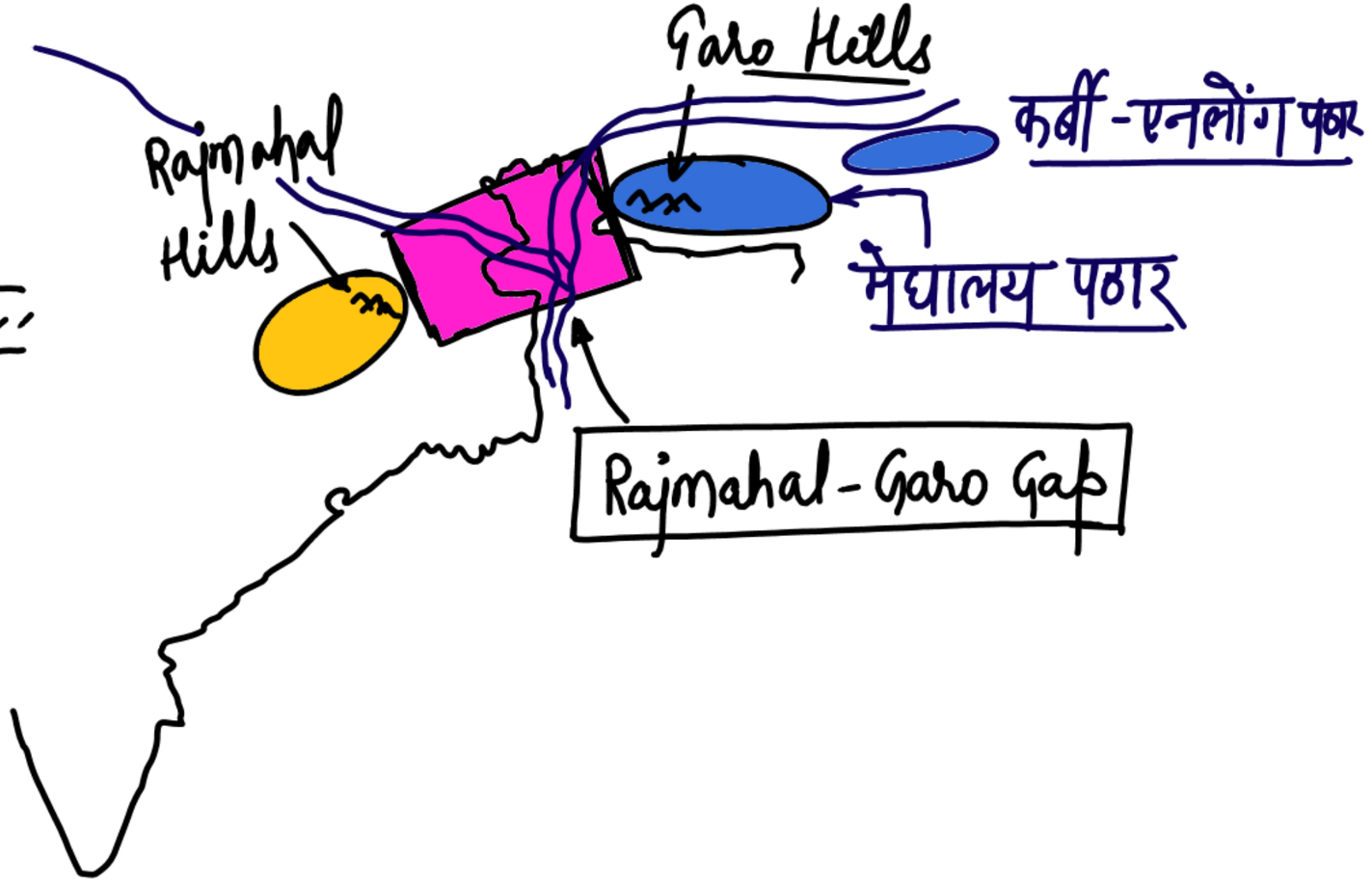

⇒ मेघालय की पहाड़ियों में लैटेराइट मृदा का विकास हुआ है।

⇒ मेघालय में गोंडवानाकालीन चट्टानों से कोयला की प्राप्ति होती है।

↓

Rat hole mining

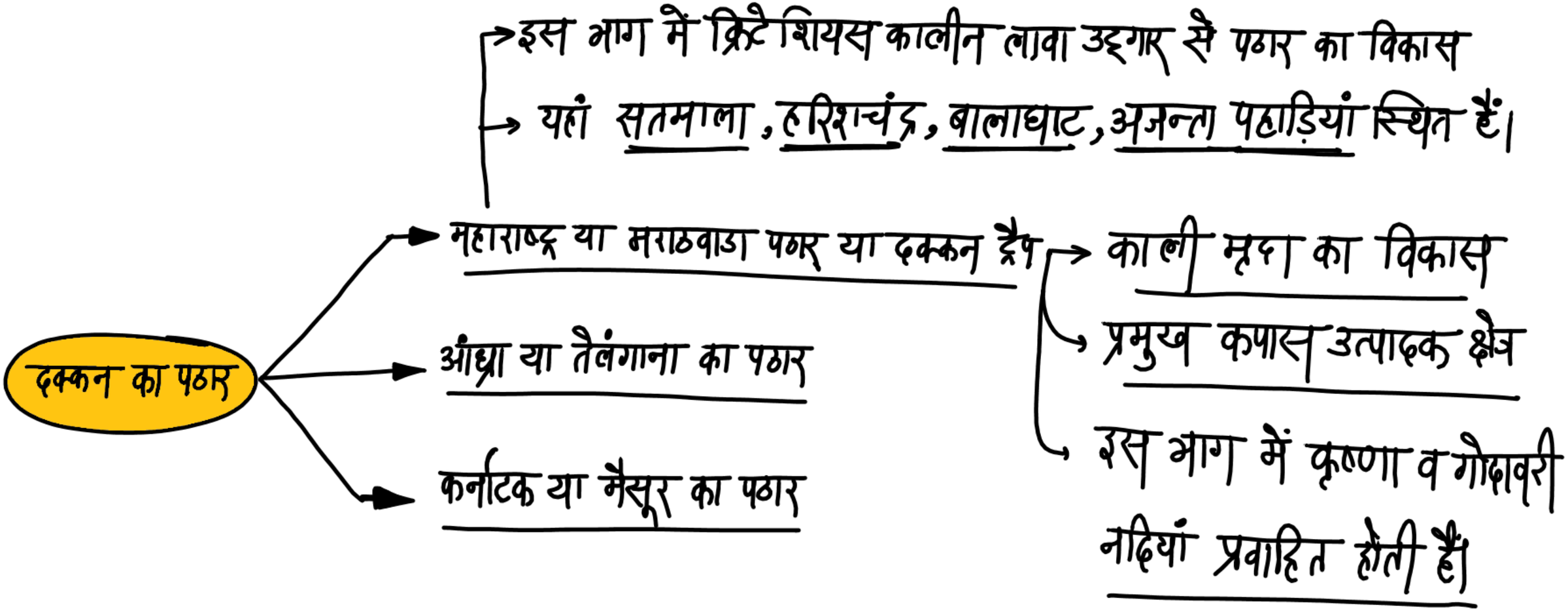
दक्कन का पठार
महाराष्ट्र या मराठवाडा पठार या दक्कन ट्रैप
इस भाग में क्रिटेशियस कालीन लावा उद्गार से पठार का विकास
यहां सतमाला, हरिश्चंद्र, बालाघाट, अजन्ता पहाड़ियां स्थित हैं।
काली मृदा का विकास
प्रमुख कपास उत्पादक क्षेत्र
इस भाग में कृष्णा व गोदावरी नदियां प्रवाहित होती हैं।
आंध्रा या तैलंगाना का पठार
कर्नाटक या मैसूर का पठार

✓ आंध्रा पठार :-

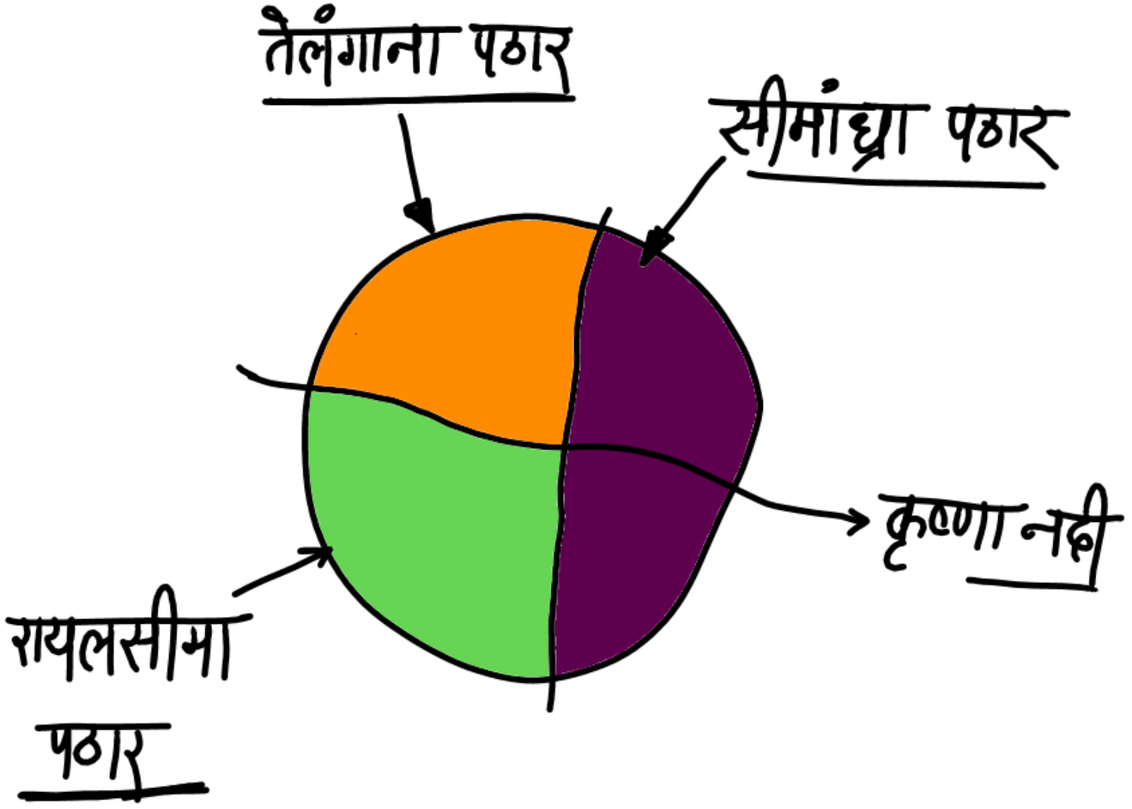

कर्नाटक या मैसूर पठार :- धारवाड क्रम की चट्टानें पायी जाती हैं जिनसे धात्विक खनिज प्राप्त होते हैं। इस पठार पर स्थित बाबा बूदन की पहाड़ियां लौह अयस्क व कॉफी उत्पादन हेतु प्रसिद्ध है। इन पहाड़ियों में स्थित मुलनगिरि चोटी कर्नाटक पठार की सर्वोच्च चोटी है